वर्ष : 13 अंक : 3 जुलाई–सितम्बर 2018

पन्त प्रसार सन्देश

(प्रसार शिक्षा निदेशालय की त्रैमासिक समाचार पत्रिका)
गोविन्द बल्लभ पन्त कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, पन्तनगर–263 145, ऊधमसिंह नगर, उत्तराखण्ड

संरक्षकः डा. तेज प्रताप, कुलपति मुख्य सम्पादकः डा. वाई. पी. एस. डबास, निदेशक प्रसार शिक्षा
सम्पादकः ई. अनिल कुमार, सह निदेशक (कृषि अभियन्त्रण) एवं डा. बी.एस. कार्की, प्राध्यापक (सस्य)

कुलपति संदेश

हमारे किसानों का अगर उन्नयन एवं विकास नहीं हुआ, खेती–बाड़ी, पशुपालन, मत्स्य पालन, वानिकी आदि अगर लाभकारी नहीं हुई तो हमें सुख शान्ति कैसे मिलेगी?यह सभी सम्भव होगा उच्चकोटि के तकनीकी विकास से, प्रक्षेत्र प्रदर्शनों से, ज्ञान एवं विज्ञान को कृषकों तक ले जाने से और कृषकों के उत्पाद को बाजार तक पहुंचाने से। प्रसंस्करण, मूल्यवर्धन, भण्डारण एवं विपणन की विभिन्न विधाओं पर हमें गहन विचार–विमर्श करना होगा। लाभकारी खेती में आने वाले अवरोधों को दूर करना होगा। इस कड़ी में विभिन्न क्षेत्र में पुरजोर प्रयास शुरू किये जा चुके हैं। सभी कृषि विज्ञान केन्द्रों के सुदृढ़ीकरण का काम विगत कुछ माह से पुरजोर गति से आगे बढ़ रहा है। अनेकानेक चीजें सतह पर उभरती नजर आ रही हैं। प्रसार शिक्षा में गतिशीलता लाने के लिए प्रसार सलाहकार समिति के माध्यम से तथा समस्त कृषि विज्ञान केन्द्रों के कार्यकलापों की समीक्षा से राज्य के किसानों के चहुँमुखी विकास की ओर कदम बढ़ाये गये हैं। हमें आशा ही नहीं पूर्ण विश्वास है कि आने वाले समय में हम अपने किसान भाइयों और बहनों की बेहतर सेवा कर सकेंगे।

वैज्ञानिकों द्वारा किए गए शोध निष्कर्षों को जन–जन तक पहुंचाने में प्रसार शिक्षा का महत्वपूर्ण योगदान है। कृषि विज्ञान केन्द्रों द्वारा आयोजित विभिन्न गतिविधियों जैसे प्रशिक्षणों, अग्रिम पंक्ति प्रदर्शनों इत्यादि द्वारा प्रदेश के सुदूरवर्ती क्षेत्रों में कृषक, कृषक महिलाएं एवं युवक तकनीकी अर्जित कर आजीविका एवं स्वरोजगार के क्षेत्र में आशातीत वृद्धि करने में सफल होंगे। इस पत्रिका द्वारा पंतनगर विश्वविद्यालय के प्रसार शिक्षा की गतिविधियों को आप तक पहुंचा कर हमें प्रसन्नता हो रही है। मुझे विश्वास है कि यह पत्रिका प्रसार कार्यों को और अधिक गतिशील बनाने में सहभागी होगी।

शुभकामनाएँ।

(तेज प्रताप)
कुलपति

कृषि विज्ञान केन्द्रों की गतिविधियाँ

कृषि विज्ञान केन्द्र, ढकरानी (देहरादून)

- केन्द्र द्वारा जनपद देहरादून के विभिन्न क्षेत्रों में एवं केन्द्र पर कुल 23 प्रशिक्षणों का आयोजन किया गया, जिसमें 486 कृषकों एवं कृषक महिलाओं ने प्रतिभाग किया। इन प्रशिक्षणों का आयोजन फसल उत्पादन, सब्जी उत्पादन, पादप सुरक्षा, पोषण प्रबन्धन, कृषि प्रसार, पशुपालन, चारा उत्पादन, मुर्गी पालन, बकरी पालन, गृह वाटिका, मेज सेलर, स्वयं सहायता समूह आदि विषयों पर किया गया, जिसमें कृषकों एवं कृषक महिलाओं को व्यवहारिक तकनीकी जानकारी दी गयी। इसके अतिरिक्त जुलाई 12, 2018 को माननीय प्रधानमंत्री जी का कृषक महिलाओं एवं महिला स्वयं सहायता समूहों को सम्बोधन के सजीव प्रसारण (लाइव टेलिकास्ट) का आयोजन केन्द्र पर किया गया, जिसमें जनपद देहरादून के विभिन्न क्षेत्रों की 57 महिलाओं ने प्रतिभाग किया। केन्द्र द्वारा अगस्त 01–11, 2018 तक केन्द्र पर एवं जनपद के विभिन्न गांवों में विश्व स्तनपान सप्ताह का आयोजन कर महिलाओं को स्तनपान विषय पर जागरूक किया गया। इस जागरूकता कार्यक्रम में 169 महिलाओं तथा 32 महिला प्रसार कर्मियों को लाभान्वित किया गया। केन्द्र द्वारा सितम्बर 01–07, 2018 में जनपद के विभिन्न गांवों एवं केन्द्र पर राष्ट्रीय पोषण सप्ताह का आयोजन भी किया गया, जिसमें 191 महिलाओं एवं 136 महिला प्रसार कर्मियों ने भाग लिया। इस कार्यक्रम के अन्तर्गत महिलाओं में पोषण की कमी से होने वाले अनेक बीमारियों तथा इनसे बचाव हेतु पोषण सम्बन्धी आहार विशेषकर संतुलित आहार के सेवन पर महिलाओं को जागरूक किया गया। केन्द्र द्वारा एक पशु स्वास्थ शिविर का आयोजन भी किया गया, जिसमें 21 किसानों के 110 पशुओं के स्वास्थ्य सम्बन्धी समस्याओं का समाधान किया गया।

राष्ट्रीय पोषण सप्ताह पर जानकारी देते हुए वैज्ञानिक

- केन्द्र के वैज्ञानिकों द्वारा 117 प्रक्षेत्र भ्रमण कर 893 किसानों की कृषि संबंधी

प्रशिक्षण प्राप्त करते हुए प्रशिक्षणार्थी

समस्याओं का निराकरण किया गया। इसके अतिरिक्त रेखीय विभागों द्वारा आयोजित 17 कृषक संगोष्ठियों में केन्द्र के वैज्ञानिकों ने प्रतिभाग किया। इन संगोष्ठियों में जनपद के विभिन्न क्षेत्रों के 627 किसानों द्वारा प्रतिभाग किया गया, जिनमें उनके द्वारा किसानों को फसल उत्पादन, सब्जी उत्पादन, पोषण सुरक्षा, कृषि प्रसार, पशुपालन, मुर्गी पालन, चारा उत्पादन, गृह वाटिका, स्वयं सहायता समुहों के सम्बन्ध में किसानों को नवीनतम तकनीकी जानकारी दी गयी। महिला मंडल दल की 03 बैठकों का आयोजन कर 42 महिलाओं को गृह वाटिका एवं स्वयं सहायता समूहों के गठन विषय पर जागरूक किया गया। केन्द्र पर किसानों के 44 भ्रमणों का आयोजन किया गया, जिसमें 234 कृषकों एवं कृषक महिलाओं को केन्द्र द्वारा संचालित विभिन्न प्रसार कार्यक्रमों के संबंध में विस्तृत जानकारी दी गयी तथा उनके कृषि संबंधी समस्याओं का निराकरण किया गया। केन्द्र के वैज्ञानिकों द्वारा 156 किसानों को दूरभाष के माध्यम से उनकी कृषि आधारित समस्याओं का समाधान किया गया। इसके अतिरिक्त केन्द्र द्वारा जनपद के विभिन्न क्षेत्रों में 55 डायग्नोस्टिक भ्रमणों के माध्यम से 507 किसानों की कृषि संबंधी समस्याओं का समाधान उनके प्रक्षेत्रों पर जाकर किया गया। केन्द्र पर 02 एक्सपोजर विजिट का आयोजन भी किया गया, जिनमें 57 कृषकों एवं कृषक महिलाओं को केन्द्र द्वारा संचालित विभिन्न प्रसार कार्यक्रमों एवं प्रदर्शनों के संबंध में विस्तृत तकनीकी जानकारी दी गयी। स्वयं सहायता समूहों की 04 बैठक आयोजित कर 51 महिलाओं को रोजगारपरक प्रशिक्षण दिया गया। विभिन्न कार्यक्रमों में केन्द्र के वैज्ञानिकों द्वारा 03 व्याख्यान दिये गये, जिसमें 87 प्रगतिशील कृषकों, प्रसार कर्मियों, निजी संगठनों के प्रतिनिधियों तथा छात्रों को कृषि एवं पशुपालन आधारित तकनीकों से लाभान्वित किया गया। केन्द्र के वैज्ञानिकों द्वारा विभिन्न समाचार पत्रों में 05 समसामयिक कृषि समाचार प्रकाशित किये गये।

- अग्रिम पंक्ति प्रदर्शनों के अन्तर्गत केन्द्र द्वारा टमाटर की संकर किस्मों– इन्डम–13407, अभिनव, अभिरंग एवं रक्षिता गोल्ड; बन्दगोभी की संकर किस्म–कृष्णा; मक्का की संकर किस्म–पी–3377; संकर धान, बासमती धान, बैक्यार्ड कुक्कुट पालन, गृहवाटिका, मेज सेलर के 282 प्रदर्शनों का आयोजन 30 है. क्षेत्रफल में किया गया। सीड हब परियोजना के अन्तर्गत जनपद के चकराता एवं कालसी विकासखण्ड के 214 कृषकों के प्रक्षेत्रों पर उर्द प्रजाति पंत उर्द–31 का बीजोत्पादन लगभग 50 है. क्षेत्रफल में किया गया। इसके अतिरिक्त कृषि विज्ञान केन्द्र, ढ़करानी के प्रक्षेत्र पर 4.0 है. तथा श्री गुरू रामराय विश्वविद्यालय, देहरादून के प्रक्षेत्र पर 15.0 है. क्षेत्रफल में उर्द का बीजोत्पादन किया गया।
- स्वच्छता ही सेवा अभियान के अन्तर्गत सितम्बर 18, 2018 को केन्द्र पर, सितम्बर 19, 2018 एवं सितम्बर 24, 2018 को इन्टर कॉलेज, लांघा, सितम्बर 20, 2018 को पुनः केन्द्र पर, सितम्बर 22, 2018 को इन्टर कॉलेज, हर्बटपुर, सितम्बर 26, 2018 को ग्राम फतेहपुर तथा सितम्बर 28, 2018 को ग्राम ढ़करानी

स्वच्छता अभियान के दौरान सम्बोधित करते हुए वैज्ञानिक

में स्वच्छता सम्बन्धी विभिन्न कार्यक्रमों का आयोजन किया गया। इन कार्यक्रमों में लगभग 500 कृषकों, महिलाओं एवं छात्रों ने प्रतिभाग किया।

- केन्द्र प्रक्षेत्र पर तैयार किये गये अनार प्रजाति भगवा के 3750 पौधे मुख्य उद्यान अधिकारी, पिथौरागढ़ को उपलब्ध कराये गये, जिससे केन्द्र को रू. 1,87,500/– का राजस्व प्राप्त हुआ।

कृषि विज्ञान केन्द्र, धनौरी (हरिद्वार)

- केन्द्र द्वारा विगत त्रैमास में कुल 29 प्रशिक्षण कार्यक्रमों का आयोजन किया गया, जिसमें जनपद के 821 कृषकों को कृषि एवं सम्बन्धित विषयों पर तकनीकी रूप से सुदृढ़ किया गया।
- केन्द्र द्वारा अग्रिम पंक्ति प्रदर्शनों में 175 तथा प्रक्षेत्र परीक्षणों में कृषकों के प्रक्षेत्रों पर कृषि, मृदा विज्ञान, कीट विज्ञान तथा गृह विज्ञान विषयक 40 विभिन्न परीक्षणों का आयोजन किया गया।
- केन्द्र द्वारा जुलाई 2018 से अगस्त 15, 2018 तक कृषि कल्याण अभियान चलाया गया। संज्ञान में लाना है कि नीति आयोग द्वारा इस अभियान हेतु देश में 112 आकांक्षी जिलों का चुनाव किया गया, जिसमें से हरिद्वार एक हैं। इस अभियान के अन्तर्गत केन्द्र द्वारा 25 चयनित ग्रामों में मौनपालन, मशरूम उत्पादन, मृदा परीक्षण तथा पोषक वाटिका के प्रशिक्षण दिये गये। इन सभी 112 जिलों से हरिद्वार जनपद ने अभियान के क्रियान्वयन में सतत् अग्रणी रहकर प्रथम स्थान प्राप्त किया।

केन्द्र पर कृषकों हेतु कृषि कल्याण अभियान का आयोजन

- केन्द्र द्वारा जुलाई 19–25, 2018 में नेशनल बी बोर्ड प्रायोजित "कुशल मौनपालन" विषय पर प्रशिक्षण का आयोजन किया गया, जिसमें 25 ग्रामीणों ने मौनपालन के सम्बन्ध में विस्तृत जानकारी प्राप्त की।
- केन्द्र द्वारा अगस्त 01–08, 2018 तक "विश्व स्तनपान सप्ताह" मनाया गया, जिसके अन्तर्गत केन्द्र द्वारा गोष्ठी, पोस्टर प्रतियोगिता, ट्रेनिंग जागरूकता अभियान तथा आंगनबाड़ी कार्यकर्ताओं की ट्रेनिंग का आयोजन किया गया। इस दौरान केन्द्र की वैज्ञानिक डा. सुचेता सिंह ने उपस्थित महिलाओं को

नवजात शिशु से एक वर्ष तक की आयु के शिशुओं के उचित खानपान व घरेलू सामग्री से सस्ते व्यंजन बनाने की जानकारी दी, वहीं स्तनपान का महत्व व शिशुओं का पोषण, टीकाकरण एवं स्तनपान के लाभ के बारे में महिलाओं को बताया। केन्द्र के प्रभारी डा. पुरूषोत्तम कुमार ने कार्यक्रम के दौरान बताया कि शिशुओं को कैल्शियम, खनिज लवण, विटामिन, वसा, प्रोटीन से परिपूर्ण भोजन अच्छी तरह से पकाकर व गलाकर खिलाना चाहिए, जिससे शिशु की पाचन क्रिया दुरस्त रहे। कार्यक्रम में करीब 25 महिलाओं ने प्रतिभाग किया।

विश्व स्तनपान सप्ताह कार्यक्रम का आयोजन

- केन्द्र द्वारा अगस्त 16–22, 2018 तक ''पारथेनियम जागरूकता सप्ताह'' का आयोजन किया गया, जिसके अन्तर्गत पारथेनियम से मानव एवं पशु जाति को होने वाले दुष्प्रभाव तथा पारथेनियम नियंत्रण पर छात्र–छात्राओं को जागरूक किया गया एवं इसके नियंत्रण के लिए जनपद के ग्रामीण क्षेत्रों में भी प्रशिक्षण आयोजित किये गये।
- केन्द्र द्वारा सितम्बर 01–07, 2018 तक ''राष्ट्रीय पोषण सप्ताह'' का आयोजन किया गया, जिसके अन्तर्गत जनपद के ग्रामीण महिलाओं, पुरूषों एवं बच्चों को पोषण प्रबन्धन के महत्व के विषयों पर जागरूक किया गया।
- केन्द्र द्वारा सितम्बर 16, 2018 से ''स्वच्छता ही सेवा'' अभियान का आयोजन किया गया। इसके अन्तर्गत घर–घर जाकर स्वच्छता का महत्व, स्वच्छता जागरूकता रैली, जैविक और अजैविक कूड़े का पृथक प्रबन्धन एवं स्कूलों में जागरूकता कार्यक्रम आयोजित किये गये। इस अभियान के अन्तर्गत 45 स्कूली बच्चों एवं 110

केन्द्र द्वारा स्वच्छता अभियान का आयोजन

कृषि विज्ञान केन्द्र, मटेला (अल्मोड़ा)

- केन्द्र द्वारा विगत त्रैमास में कृषकों, ग्रामीण युवाओ एवं प्रसार कार्यकर्ताओं हेतु 28 प्रशिक्षण कार्यक्रमों का आयोजन किया गया, जिसमें 474 प्रशिक्षणार्थियों द्वारा प्रतिभाग किया गया।
- केन्द्र के वैज्ञानिकों द्वारा विगत त्रैमास में 09 कृषकों के प्रक्षेत्रों पर भ्रमण का आयोजन किया गया, जिसमें 43 कृषकों को आवश्यक जानकारी उपलब्ध कराई गयी।
- केन्द्र द्वारा विगत त्रैमास में 17.55 है. क्षेत्रफल में 243 कृषकों के प्रक्षेत्रों पर अग्रिम पंक्ति प्रदर्शनों एवं अनुकरणीय प्रदर्शनों का आयोजन किया गया। केन्द्र के वैज्ञानिकों द्वारा समय–समय पर अग्रिम पंक्ति प्रदर्शन स्थलों का भ्रमण कर कृषकों को आवश्यक समसामयिक तकनीकी जानकारी प्रदान करने के साथ–साथ उनकी समस्याओं का समाधान भी किया गया।
- विगत त्रैमास में केन्द्र द्वारा विभिन्न स्थानीय एवं राज्य स्तरीय समाचार पत्रों में 02 कृषि कार्यो की न्यूज प्रकाशित की गई तथा विभिन्न फसलों पर 02 प्रक्षेत्र दिवस का आयोजन किया गया, जिसमें 77 कृषकों एवं रेखीय विभागों के अधिकारी/कर्मचारियों द्वारा प्रतिभाग किया गया।

प्रक्षेत्र दिवस का आयोजन करते हुए केन्द्र के वैज्ञानिक

- केन्द्र के वैज्ञानिकों द्वारा विगत त्रैमास में 02 किसान गोष्ठियों का आयोजन रेखीय विभागों हेतु किया गया, जिसके अन्तर्गत केन्द्र के वैज्ञानिकों द्वारा व्याख्यान दिये गये, जिसमें 45 कृषकों द्वारा प्रतिभाग किया गया। केन्द्र प्रक्षेत्र पर 03 भ्रमण कार्यक्रमों के अन्तर्गत 18 कृषकों द्वारा भ्रमण किया गया, जिन्हें केन्द्र पर प्रदर्शित तकनीकियों का अवलोकन कराया गया।
- महिला सशक्तिकरण, गाजर घास उन्मूलन एवं स्वच्छता अभियान कार्यक्रम के अन्तर्गत 28 कार्यक्रमों का आयोजन किया गया, जिसमें 292 प्रतिभागियों द्वारा प्रतिभाग किया गया।

कृषि विज्ञान केन्द्र, ज्योलीकोट (नैनीताल)

- विगत त्रैमास में केन्द्र के वैज्ञानिकों द्वारा विभिन्न विषयों जैसे – कद्दूवर्गीय फसलों, धान एवं टमाटर में नाशीजीवी कीट प्रबन्धन, बकरी पालन, मवेशी एवं भैंसों में कृत्रिम गर्भाधान के माध्यम से नस्ल सुधार, पर्वतीय क्षेत्रों में गृह वाटिका के प्रति महिलाओं में पोषक सुरक्षा की जागरूकता लाना, अनाज एवं दालों के भंडारण हेतु हानि न्यूनीकरण की तकनीकें, लघु उद्योग के रूप में मोमबत्ती तैयार करना, अचार व साँस बनाकर आम का मूल्य संवर्धन, सेब का मूल्य संवर्धन, पुराने कपड़ों का पुनर्नवीनीकरण द्वारा बैग बनाने में कौशल विकास आदि विषयों पर कुल 11 प्रशिक्षण कार्यक्रमों का आयोजन केन्द्र से बाहर जनपद के चोपड़ा, गेठिया, दोगड़ा, भटलानी, सकुना, कौसानी, लमजाला, भरतपुर आदि ग्रामों में किया गया।

केन्द्र पर प्रशिक्षण प्राप्त करते हुए प्रशिक्षणार्थी

- केन्द्र के वैज्ञानिकों द्वारा विगत त्रैमास में पशुपालन, गृहविज्ञान, पादप सुरक्षा तथा उद्यान विज्ञान एवं अन्य विषयों जैसे मोमबत्ती बनाना, पोषक वाटिका, महिलाओं के श्रम व समय कम करने हेतु उन्नत मेज सेलर का उपयोग, चारा मक्का, चारा लोबिया, धान में उकठा रोग प्रबन्धन आदि विषयों में कुल 110 प्रदर्शन कार्यक्रमों का कुशल संचालन किया गया। प्रदर्शनों का आयोजन लगभग 6.15 है. क्षेत्रफल में दोगड़ा, चोपड़ा, गेठिया, स्यालीखेत, भटलानी,

धनपुर, आदि स्थानों पर किया गया। सांथ ही वैज्ञानिकों द्वारा विभिन्न विषयों जैसे : महिलाओं के समय एवं श्रम को कम करने हेतु उन्नत दरांती, टमाटर में झुलसा रोग का एकीकृत प्रबन्धन विषय पर प्रक्षेत्र परीक्षण भी आयोजित किये गये।

- केन्द्र द्वारा सी.आई.टी.एच., मुक्तेश्वर में सितम्बर 22, 2018 को सेब दिवस का आयोजन किया गया। सांथ ही जुलाई 25, 2018 तथा सितम्बर 14, 2018 को गन्ना अनुसंधान संस्थान, काशीपुर के सहयोग से सीतापुर, हल्द्वानी में गन्ने में कीट व्याधि विषय पर 03 कृषक गोष्ठियों का आयोजन किया गया।
- केन्द्र की गृह वैज्ञानिक द्वारा अगस्त 01–07, 2018 तक सात दिवसीय विश्व स्तनपान सप्ताह का आयोजन जनपद के विभिन्न ग्रामों जैसे – कृष्णापुर, दोगड़ा, लमजाला, आनन्दपुर, गहना, जयपुर खीमा आदि में किया गया, जिसके अन्तर्गत विभिन्न विषयों जैसे– माँ का प्रथम दूध–बच्चे के लिये अत्यन्त उपयोगी, बच्चों में टीकाकरण, माँ का दूध बच्चों के लिये सर्वोत्तम आहार, स्तनपान कराने वाली माताओं का आहार आदि विषयों से सम्बन्धित व्याख्यान दिये गये, जिसके अन्तर्गत 161 महिलाओं को लाभान्वित किया गया।
- केन्द्र के तत्वाधान में सितम्बर 01–07, 2018 तक सात दिवसीय राष्ट्रीय पोषण सप्ताह का आयोजन जनपद के विभिन्न ग्रामों यथा– जून स्टेट, भगत्यूड़ा, गहना तोक सौनेड़ा, रानीबाग, सकूना (पिछलटांडा), दांगड़ आदि में किया गया, जिसके अन्तर्गत विभिन्न विषयों जैसे– संतुलित आहार का महत्व, कुपोषण से बचाव, कम मूल्य लागत वाले मूल्य वर्धित उत्पाद, सोयाबीन के उत्पाद आदि विषयों से सम्बन्धित व्याख्यान दिये गये, जिसके अन्तर्गत 134 महिलाओं ने प्रतिभाग किया।

पोषण सप्ताह कार्यक्रम में प्रतिभाग करती महिला प्रतिभागियां

कृषि विज्ञान केन्द्र, लोहाघाट (चम्पावत)

- खरीफ 2018 में ग्राम तोली, डोबाभागू, तडीगांव व डुगरालेटी में 55 कृषकों के प्रक्षेत्रों पर 1.1 है. क्षेत्रफल में कन्दमूल, हरी पत्तीदार व फलदार सब्जियों को सम्मिलित करते हुए पोषक वाटिका पर अग्रिम पंक्ति प्रदर्शनों का आयोजन किया गया।
- विगत त्रैमास में केन्द्र द्वारा फसल उत्पादन, फसल सुरक्षा, पशुपालन, मत्स्य पालन, खाद्य प्रसंस्करण एवं पोषण प्रबन्धन विषयों पर कुल 18 प्रशिक्षण आयोजित किये गये, जिसमें कुल 366 कृषकों ने भाग लिया। इसके अतिरिक्त मशरूम उत्पादन एवं मौन पालन विषय पर 40 बेरोजगार युवाओं हेतु 02 प्रशिक्षणों का आयोजन किया गया।
- अगस्त 01–07, 2018 में केन्द्र द्वारा ''स्तनपान सप्ताह'' का आयोजन किया गया। इसके अन्तर्गत विभिन्न गांवों में जागरूकता अभियान चलाकर महिलाओं को स्तनपान से होने वाले फायदों तथा बच्चों के लिए बेबी फूड बनाने की तकनीक से अवगत कराया गया, जिसमें 95 महिलाओं ने प्रतिभाग किया।
- सितम्बर 01–07, 2018 तक केन्द्र द्वारा ''राष्ट्रीय पोषण सप्ताह'' का आयोजन कर ग्राम सुई, पऊँ, रायनगर चौडी, डुगरालेटी, तोली गांव की कुल 127 महिलाओं को स्थानीय खाद्यों की पौष्टिकता व उनके गुणों से अवगत करवाकर दैनिक भोजन में इनका अधिक से अधिक उपयोग की सलाह दी गई। इस दौरान 82 महिला कृषकों के प्रक्षेत्रों पर तथा राजकीय विद्यालय, डुगरालेटी में पोषण वाटिका पर प्रदर्शन लगवाकर महिलाओं व बच्चों को संतुलित आहार के प्रति जागरूक किया गया।
- स्वच्छता ही सेवा अभियान के अन्तर्गत केन्द्र में सितम्बर 18, 2018 से विभिन्न कार्यक्रमों का आयोजन किया गया, जिसके अन्तर्गत केन्द्र व केन्द्र के

ग्राम मानर में प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन

आस–पास के गॉवों में सफाई अभियान चलाकर कार्यक्रम का सुभारम्भ किया गया। सितम्बर 19, 2018 को राजकीय आदर्श कन्या विद्यालय में बाएफ संस्था के सहयोग से एक गोष्ठी का आयोजन किया गया, इसके पश्चात् स्कूल की बालिकाओं द्वारा रैली निकाली गई। सितम्बर 24, 2018 को राजकीय माध्यमिक इण्टर कालेज, खीडी में पोस्टर प्रदर्शन एवं निबन्ध प्रतियोगिता का आयोजन कर छात्र–छात्राओं को सफाई के प्रति जागरूक किया गया। इसी क्रम में ग्राम चन्दनी में सितम्बर 26, 2018 को फोक सौंग व नुक्कड नाटक का आयोजन कर स्थानीय लोगों को घर व अपने आसपास के वातावरण को स्वच्छ रखने की सलाह दी गई।

- विगत त्रैमास में केन्द्र द्वारा पत्तागोभी की 2200 पौध उत्पादित कर 12 कृषकों को वितरित की गई। संरक्षित खेती के अन्तर्गत शिमला मिर्च की यमुना, कैलिर्फोनिया वंडर, महेश, राधा, लक्की 100, अंजली+ प्रजातियॉ (F1 हाईब्रिड) लगाई गयी, जिसमें अंजली+ प्रजाति का उत्पादन अन्य प्रजातियों की तुलना में बेहतर पाया गया। उपरोक्त प्रजातियों से 200 वर्ग मी. पॉलीहाउस में 587 कि. ग्रा. शिमला मिर्च का उत्पादन किया गया।

कृषि विज्ञान केन्द्र, काशीपुर (ऊधमसिंहनगर)

- केन्द द्वारा विगत त्रैमास में जनपद में केन्द्र पर एवं केन्द्र के बाहर कुल 16 प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किये गए, जिसमें 471 प्रशिक्षणार्थियों ने प्रतिभाग

प्रशिक्षण कार्यक्रम में प्रतिभाग करती हुई स्कूल की छात्राएं

किया। ये प्रशिक्षण कार्यक्रम कृषको हेतु विभिन्न स्थानों पर आयोजित किये गए, जिनके अन्तर्गत तोरिया फसल में खाद्य प्रबन्धन, अच्छे स्वास्थ्य के लिये पोषण महत्व, मछली के तालाब में स्टॉक्रिंग, उर्द में राइजोबियम कल्चर तकनीकी, स्टॉकिंग, स्तनपान का महत्व, गृह वाटिका का प्रबन्धन आदि विषय सम्मिलित थे। कृषि कल्याण अभियान के अर्न्तगत भी केन्द्र द्वारा गृह वाटिका पर प्रशिक्षण

प्रशिक्षण कार्यक्रम के दौरान प्रशिक्षणार्थी

आयोजित किये गए एवं मशरुम उत्पादन व मधुमक्खी पालन पर कृषकों को जानकारी प्रदान की गई।

- विगत त्रैमास में प्रथम पंक्ति प्रदर्शन एवं कलस्टर प्रदर्शनों के अर्न्तगत मूँगफली, उर्द (पी.यू. 31) एवं सोया आधारित मूल्यवर्दित प्रदार्थ विषयों पर प्रदर्शन आयोजित किये गए, जिसमें कुल 68 कृषक/कृषक महिलाऐं लाभान्वित हुए। इसके अतिरिक्त केन्द्र द्वारा पौष्टिक आटे के द्वारा स्वास्थ्य सुधार एवं मछली की उन्नत प्रजातियों द्वारा कृषको की आय बढ़ाने विषय पर 'ऑन फार्म ट्रायल' आयोजित किये गये।
- केन्द द्वारा विगत त्रैमास में ''स्तनपान सप्ताह'' का आयोजन किया गया। कार्यक्रम के अर्न्तगत केन्द्र की गृह वैज्ञानिक डा. प्रतिभा सिंह द्वारा महिलाओं को स्तनपान के महत्व एवं छः माह तक शिशु के लिए मां के दूध की महत्ता विषय पर जानकारी दी गई।
- स्वच्छता ही सेवा के विषय में केन्द्र द्वारा ग्रामीण क्षेत्रों एवं विभिन्न स्कूलों में स्वच्छता अभियान चलाया गया तथा पोस्टर प्रतियोगिता का भी आयोजन किया गया।
- केन्द्र के वैज्ञानिकों द्वारा पंतनगर में PFMS पर आयोजित प्रशिक्षण कार्यक्रम एवं ATARI, लुधियाना में skill development पर आयोजित प्रशिक्षण कार्यक्रमों में प्रतिभाग किया गया।
- केन्द्र के वैज्ञानिको द्वारा 01 रेडियो एवं 01 एवं टेलीविजन वार्ता का आयोजन किया गया तथा प्रमुख अखबारों में 08 समाचारों का प्रकाशन करवाया गया।

कृषि विज्ञान केन्द्र, गैना-ऐचोली (पिथौरागढ़)

- केन्द्र द्वारा विगत त्रैमास में केन्द्र पर 36 प्रशिक्षण आयोजित किये गये, जिसमें 765 कृषक (475 पुरूष एवं 290 महिला) लाभान्वित हुए। ग्रामीण युवाओं हेतु केन्द्र पर 01 प्रशिक्षण आयोजित किया गया जिसमें कुलः 10 युवाओं को लाभान्वित किया गया। केन्द्र के वैज्ञानिकों द्वारा प्रसार कार्यकर्ताओं हेतु 03 प्रशिक्षण आयोजित किये गये जिसके द्वारा 62 प्रतिभागियों (51 पुरूष एवं 11 महिला) को कृषि की नवीनतम तकनीकी उपलब्ध करायी गयी।
- केन्द्र के वैज्ञानिकों द्वारा सोयाबीन के 4.0 है., अरहर–1.0 है., गहत–1.0 है., धान–5.0 है., लाही–1.0 है., मक्का–1.0 है. तथा ज्वार के 3.0 है. में अग्रिम पंक्ति प्रदर्शन लगाये गये।
- केन्द्र के वैज्ञानिकों द्वारा विगत त्रैमास में कृषकों के प्रक्षेत्रों पर 137 भ्रमण किया गये, जिनके द्वारा 710 कृषक लाभान्वित हुए। केन्द्र पर जानकारियॉ प्राप्त करने हेतु किसानों द्वारा 148 भ्रमण किये गये जिसमें 1063 किसान लाभान्वित हुए। विगत त्रैमास में केन्द्र के वैज्ञानिकों द्वारा किसान गोष्ठियों में 15 व्याख्यान दिये

केन्द्र पर प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन

गये, जिसमें कुल 373 किसान लाभावित हुए। इसके अलावा केन्द्र के वैज्ञानिकों द्वारा 04 किसान गोष्ठियों का आयोजन किया गया, जिसमें कुल 162 किसानों को कृषि की विभिन्न तकनीकियों पर जानकारी उपलब्ध करायी गयी। प्रचार–प्रसार हेतु दैनिक समाचार पत्र अमर उजाला व दैनिक जागरण में 03 तकनीकी समाचारों को प्रकाशित किया गया।

- केन्द्र के वैज्ञानिकों द्वारा अगस्त 01–07, 2018 तक 'विश्व स्तनपान सप्ताह' कार्यक्रम तथा सितम्बर 01–07, 2018 तक 'राष्ट्रीय पोषण सप्ताह' कार्यक्रम का आयोजन किया गया, जिनमें क्रमशः 252 एवं 152 प्रतिभागियों को जागरूक किया गया।
- केन्द्र के वैज्ञानिकों द्वारा सितम्बर 15, 2018 से 'स्वच्छता ही सेवा' दिवस कार्यक्रम का आयोजन किया गया, जिसमें 118 किसानों ने प्रतिभाग किया।
- केन्द्र के वैज्ञानिकों द्वारा सितम्बर 27–29, 2018 में 20 छात्रों को जिला नवाचार निधि के अन्तगर्त मशरूम/सब्जी/पुष्पोत्पादन एवं औषधीय पौधों के उत्पादन की जानकारी दी गई।
- केन्द्र के वैज्ञानिकों द्वारा विगत त्रैमास में केन्द्र पर 148 मृदा नमूनों का परीक्षण किया गया और 96 किसानों को मृदा स्वास्थ्य कार्ड वितरित किये गये।

समेटी-उत्तराखण्ड द्वारा आयोजित प्रशिक्षण

राज्य कृषि प्रबन्धन एवं प्रसार प्रशिक्षण संस्थान, उत्तराखण्ड (समेटी–उत्तराखण्ड) द्वारा विगत त्रैमास में राज्य के प्रगतिशील कृषक, कृषक सलाहकार समिति (एफ.ए.सी.), विकास खण्ड स्तरीय तकनीकी दल (बी.टी.टी.), ब्लाक तकनीकी प्रबन्धक (बी.टी.एम.), फार्म स्कूल संचालक, सब्जी/फल उत्पादक कृषक, उद्यान विभाग के कार्मिक एवं प्रसार कर्मियों हेतु 'फसल एवं सब्जियों की जैविक खेती', 'संरक्षित सब्जी उत्पादन', 'फल एवं सब्जी प्रसंस्करण– एक लाभकारी व्यवसाय', 'दुग्ध उत्पादन एवं दुधारू पशुओं का प्रबन्धन' तथा 'ड्रिप एवं स्प्रिंकलर सिंचाई तकनीकी' विषयक 05 प्रशिक्षण कार्यक्रमों का आयोजन किया गया। इन प्रशिक्षण कार्यक्रम के द्वारा कुल 98 प्रशिक्षणार्थी लाभान्वित हुए। प्रशिक्षण कार्यक्रम का संचालन ई. अनिल कुमार, सह निदेशक (मृदा एवं जल संरक्षण अभियांत्रिकी) एवं डा. बी.वी. सिंह, वरिष्ठ तकनीकी सहायक द्वारा किया गया।

प्रशिक्षण एवं भ्रमण इकाई द्वारा आयोजित प्रशिक्षण/भ्रमण

प्रसार शिक्षा निदेशालय के प्रशिक्षण एवं भ्रमण इकाई द्वारा विगत त्रैमास में विभिन्न सरकारी विभागों, स्वयं–सेवी संस्थाओं, निजी एवं सार्वजनिक फर्मों तथा परियोजनाओं द्वारा प्रायोजित कुल 17 प्रशिक्षण कार्यक्रमों का आयोजन किया गया। आयोजित किये गये यह प्रशिक्षण पशुपालन प्रबन्धन, मशरूम उत्पादन, रोजगारपरक मधुमक्खी पालन, सब्जी उत्पादन, कृषि सिंचाई की नवीनतम तकनीक, कुक्कुट पालन एवं कृषि तकनीकी से सम्बन्धित थे। इन प्रशिक्षण कार्यक्रमों से 643 प्रशिक्षणार्थी लाभान्वित हुए। अधिकांश प्रशिक्षण दो दिवसीय से लेकर पांच दिवसीय थे। प्रशिक्षण एवं भ्रमण कार्यक्रम का संचालन प्राध्यापक एवं प्रभारी प्रशिक्षण डा. एस. के. बंसल द्वारा किया गया।

एकल खिड़की पद्धति से कृषक सेवा

प्रसार शिक्षा निदेशालय के अन्तर्गत कार्यरत कृषि प्रौद्योगिकी सूचना केन्द्र (एटिक) द्वारा विगत त्रैमास में पंतनगर कृषक हेल्पलाईन (05944–234810, 05944–235580) एवं किसान कॉल सेन्टर (1800–180–1551 टोल फ्री) के माध्यम से किसानों द्वारा कुल 560 प्रश्न पूछे गये, जिनका समाधान सम्बन्धित विषय के वैज्ञानिकों द्वारा किया गया। देश एवं प्रदेश के विभिन्न स्थानों से आये 892 कृषकों ने एटिक पर भ्रमण किया एवं किसानों द्वारा एटिक से कुल रू. 39,210 के साहित्य एवं रू. 47,280 के विभिन्न सब्जियों, धान, सोयाबीन, अरहर, उर्द आदि के बीज क्रय किये गये। एटिक की गतिविधियों का संचालन डा. राम जी मौर्य, प्राध्यापक (सस्य)/प्रभारी अधिकारी एटिक के मार्गदर्शन में किया गया।

केवीके संदेश एप पर प्रशिक्षण

आई.सी.ए.आर.–टी.सी.एस. परियोजना के अन्तर्गत अगस्त 28, 2018 में प्रसार शिक्षा निदेशालय द्वारा **'केवीके संदेश एप'** पर प्रशिक्षण का आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम में उत्तराखण्ड के समस्त कृषि विज्ञान केन्द्रों के कार्यक्रम सहायकों (कम्प्यूटर) तथा प्रसार शिक्षा निदेशालय के वैज्ञानिकों द्वारा प्रतिभाग किया गया। इस प्रशिक्षण में मास्टर ट्रेनर्स द्वारा इस एप की सहायता से वैज्ञानिकों द्वारा कृषकों को कृषि सलाहकार सेवाऐं एवं उनकी समस्याओं का त्वरित समाधान उपलब्ध कराने के सम्बन्ध में विस्तृत जानकारी दी गई।

केवीके के वैज्ञानिकों/कार्यक्रम सहायकों द्वारा प्रशिक्षण कार्यक्रमों में सहभागिता

- विस्तार शिक्षण संस्थान, नीलोखेड़ी द्वारा आयोजित पाँच दिवसीय 02 विभिन्न प्रशिक्षण कार्यक्रमों में कृषि विज्ञान केन्द्रों के तीन वैज्ञानिकों एवं तीन कार्यक्रम सहायकों द्वारा सहभागिता की गयी।
- विभिन्न कृषि विज्ञान केन्द्रों के चार कार्यक्रम सहायकों द्वारा विवेकानन्द पर्वतीय कृषि अनुसंधान संस्थान, अल्मोड़ा में ''इन्टीग्रेटेड पेस्ट मैनेजमेन्ट'' विषय पर संस्थान द्वारा आयोजित 10 दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम में प्रतिभाग किया गया।

आगामी त्रैमास में कृषकों हेतु महत्वपूर्ण बिन्दु

कृषि हेतु–

- पुष्प गुच्छ रोग की रोकथाम हेतु अक्टूबर माह में आम के बाग में नैप्थलीन एसिटिक एसिड (200 पीपीएम) का छिड़काव करें एवं नवम्बर माह में मीली बग से बचाने के लिए वृक्षों पर पालीथीन की 30 से.मी. चौड़ी पट्टी गोलाई में बांधकर दोनों सिरों पर ग्रीस लगायें तथा प्रति वृक्ष थालों एवं तनों पर क्लोरोपाइरीफॉस 5 प्रतिशत धूल की 200–250 ग्रा. मात्रा का बुरकाव करें।
- आलू, मूली, गाजर, शलजम, लहसुन की बोआई अक्टूबर माह में करें।
- असिंचित क्षेत्रों में चना, मटर, मसूर की बोआई अक्टूबर माह के तृतीय सप्ताह तक एवं सिंचित क्षेत्रों में नवम्बर के प्रथम पखवाड़े तक तथा पर्वतीय क्षेत्रों में अक्टूबर से मध्य नवम्बर तक अवश्य कर लें।
- आड़ू, आलूबुखारा एवं खुबानी में जड़ छेदक कीट की रोकथाम हेतु क्लोरोपाइरीफॉस (4 मि.ली./10 लीटर पानी में) का घोल बनाकर थालों में सिंचाई करें।
- पर्वतीय क्षेत्रों में अक्टूबर के मध्य से नवम्बर के प्रथम सप्ताह तक मसूर की बोआई करें।
- मैदानी एवं निचले पर्वतीय असिंचित क्षेत्र में गेहूं की बोआई अक्टूबर के द्वितीय पखवाड़ें में एवं ऊंचे पर्वतीय क्षेत्रों में अक्टूबर के प्रथम सप्ताह तथा सिंचित क्षेत्रों में नवम्बर में करें।
- अक्टूबर माह में नींबू वर्गीय फल, आंवला, करौदा, कटहल, अमरूद, नाशपाती में रस्ट की रोकथाम हेतु ब्लाइटाक्स 50 (0.25 प्रतिशत) का छिड़काव करें।
- राई एवं सरसों की बोआई अक्टूबर के प्रथम पखवाड़े तक अवश्य पूरा कर लें।

पशुपालन एवं अन्य हेतु–

- मत्स्य तालाब में अक्टूबर/नवम्बर माह में खाद व उर्वरक का प्रयोग करें। मछलियों को पर्याप्त मात्रा में परिपूरक आहार दें। अवांछनीय जलीय जीव जन्तुओं को निकालते रहें।
- पशुओं को चर्मरोग से बचाने हेतु सूखे खुरारे का प्रयोग करें।
- मुर्गी घरों के बिछावन को दिन में 2–3 बार पलटते रहें ताकि वह सूखता रहे।
- मुर्गियों से अधिक अण्डा प्राप्त करने हेतु दिन और रात की कुल रोशनी 16 घण्टे बनाएं रखें। जैसे–जैसे दिन छोटे होते जाएं रात की रोशनी बढ़ाते जाएं।
- पशुओं के छोटे बच्चों को कृमि रहित करने हेतु पिपराजीन या अन्य दवा चिकित्सक की परामर्श अनुसार दें।
- माह नवम्बर एवं दिसम्बर में पशुओं को ठण्ड से बचाव हेतु पशुशाला पर पर्दे लगायें। अक्टूबर एवं नवम्बर माह में भैंस गरमी में आती है अतः ध्यान दें। गाभिन भैंसों को अधिक खनिज लवण दें।

निदेशक प्रसार शिक्षा डा. वाई.पी.एस. डबास द्वारा विभिन्न वाह्य आयोजनों/बैठकों में प्रतिभाग

- जुलाई 24, 2018 को हरदोई में एक कृषि विज्ञान केन्द्र स्थापित किये जाने हेतु साइट सेलेक्शन कमेटी में प्रतिभाग किया गया।
- जुलाई 26–27, 2018 तक हरिद्वार के शेरपुर, खेलमऊ में कृषि विज्ञान केन्द्र, धनौरी (हरिद्वार) के सहयोग से गठित संस्था जीवामृत फार्मर प्रोड्यूसर कम्पनी लि0 को और अधिक बेहतर बनाने हेतु तथा जैविक पदार्थों के उपयोग एवं इनसे होने वाले आर्थिक लाभ के प्रचार–प्रसार हेतु समीक्षा कार्यक्रम में प्रतिभाग किया गया।
- अगस्त 28, 2018 को आई.वी.आर.आई., बरेली में अध्ययनरत् पी.एच.डी. के छात्र का वाईवा लेने हेतु प्रतिभाग किया गया।
- सितम्बर 03–04, 2018 तक कमरा नं. 303 ए, आयोग सचिवालय भवन, शाहजहाँ रोड, नई दिल्ली में संघ लोक सेवा आयोग की गोपनीय बैठक में प्रतिभाग किया गया।
- सितम्बर 20, 2018 को कृषि विज्ञान केन्द्र, ज्योलीकोट (नैनीताल) का निरीक्षण एवं कार्यों की समीक्षा हेतु बैठक में प्रतिभाग किया गया।

निदेशक की कलम से

भारत का सत्ताइसवां राज्य उत्तराखण्ड प्राकृतिक वन सम्पदा की दृष्टि से एक धनी राज्य है, जहाँ की दो तिहाई आबादी कृषि पर आधारित है। राज्य में लगभग 12.50 प्रतिशत कृषि भूमि है, जिसका फैलाव ऊँची पहाड़ियों से लेकर भावर, तराई के मैदानी क्षेत्रों तक है। आज के परिप्रेक्ष्य में यह निश्चित है कि कृषि जोत का आकार दिन–प्रतिदिन कम होता जा रहा है। अतः कृषि के लिए सीमित भू–भाग में बेहतर उत्पादन के लिए लाभकारी कृषि उत्पादों को बढ़ावा दिया जा रहा है।

उत्तराखण्ड की पहाडियों और कुमायूँ के तराई क्षेत्रों में लगभग 33 वनस्पति प्रजातियां ऐसी हैं, जिनके रेशों को वस्त्र निर्माण एवं अन्य उपयोगों में लाया जा सकता है। इन कृषि आधारित रेशों में भांग (केनाबिस सेटाइवा), जंगली भिण्डी (हिविसकस फेक्यूलेन्स), रामबांस (अगेव अमेरीकाना) और मूर्वा (सेन्सिवेरिया झइफेसिएटा) आदि कुछ प्रमुख हैं। कृषि आधारित रेशों का वस्त्र उद्योग में उपयोग बहुत पुराने समय से होता चला आ रहा है, लोगों द्वारा आज भी पुराने तरीकों से पेड़–पौधों से रेशा निकालकर उपयोग में लाया जा रहा है। इन रेशों के प्रसंस्करण, मूल्यवर्धन व बाजारी भाव के ज्ञानाभाव में इस तरह के कार्यो से प्राप्त लाभ न के बराबर है। इसलिए नई पीढ़ी इसे नहीं अपना पा रही है। परिणाम स्वरूप यह उद्यम अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर अपनी पहचान बनाने में असमर्थ है।

सम्पूर्ण विश्व में पर्यावरण के लिए सुरक्षित वस्तुओं की मांग बढ़ रही है। आज के फैशन जागरूक उपभोक्ता के बीच में प्राकृतिक रूप से बने वस्त्रों/उत्पादों की बहुत मांग है। विदेशी उपभोक्ता प्राकृतिक रूप से तैयार उत्पादों को अधिक कीमत पर भी खरीदने को तैयार रहते हैं। इसे देखते हुए यह निश्चित तौर पर कहा जा सकता है कि यदि कृषि आधारित वस्तुओं का मूल्यवर्धन करके प्राकृतिक वस्त्र, कई सजावटी वस्तुए जैसे बैग, पर्स, मैट्स, वॉल हैंगिंग, डलिया, टोकरी, पेन होल्डर, हैट, दरी, चटाई इत्यादि बनाई जाए तो निश्चित ही उनसे अच्छा लाभ अर्जन किया जा सकता है। इसके साथ ही तीव्रता से बढ़ती जनसंख्या की बढ़ती मांग के साथ हम केवल सूती, रेशमी, ऊनी वस्त्रों के स्रोत पर ही निर्भर नहीं रह सकते हैं। हमें वस्त्रों के अपारम्परिक स्रोतों की ओर ध्यान देना भी आवश्यक है। इनका उपयोग हमारी वस्त्र सम्बन्धी मांगों को तो पूरा करेगा ही, साथ ही यह लोगो को रोजगार दिलाने में तथा राष्ट्रीय आय को बढ़ाने में अपना बहुमूल्य योगदान देगा। इसके रेशों से बने कपड़ों की मांग को बढ़ावा देकर हम कृत्रिम धागों से होने वाले पर्यावरण प्रदूषण की समस्या को भी कम कर सकेंगे। उत्तराखण्ड जैसे पर्वतीय क्षेत्र में जहाँ बड़े कल–कारखाने स्थापित नहीं किए जा सकते हैं, वहाँ इन स्थानीय रेशों पर आधारित कुटीर उद्योग लोगों को रोजगार दिलाने का एक बेहतर माध्यम है। यह उद्योग कृषि आधारित है। इसे कृषक महिलाएं समूह बनाकर व्यवसाय के रूप में अपनाकर धनोपार्जन करके अपने परिवार का जीवन स्तर सुधार सकती हैं।

हस्तशिल्पियों को बढ़ावा देने के लिए सरकार द्वारा जगह–जगह सरस मार्केट भी बनाएं जा रहे हैं। किसान मेले, प्रगति मैदान में आयोजित ट्रेड फेयर, दिल्ली हाट आदि कई ऐसे स्थान हैं जहाँ विदेशी भ्रमण करते हैं जो प्राकृतिक उत्पादों को अधिक कीमत पर भी खरीदने को तैयार रहते हैं। इस प्रकार प्राकृतिक रेशों से बनी वस्तुओं को जिसमें शुरूआती लागत कम होती है, को उचित मूल्यवर्धन द्वारा अधिक लाभ कमाया जा सकता है।

उत्तराखण्ड देश का पहला ऐसा पर्वतीय राज्य है जहाँ बाँस एवं रेशा विकास परिषद् का गठन किया गया है। केन्द्र सरकार के कपड़ा मंत्रालय द्वारा भी प्राकृतिक रेशों के लिए कई राष्ट्रीय नीतियां बनाएं जाने का प्रावधान है, जिसमें इन उत्पादों की डिजाइनिंग को बेहतर करके उन्हें अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर पहचान दिलाने हेतु प्रोफेशनल डिजाइनरों को भी रखा जा रहा है व 'उत्तराखण्ड हथकरघा हस्तशिल्प विकास परिषद् का गठन किया गया है। इन रेशों से तैयार उत्पादों की गुणवत्ता निश्चित करके उन्हें इनकी हिमाद्रि नाम से ब्राडिंग की जा रही है, व देहरादून में सिल्क पार्क की स्थापना की गई है। सरकार द्वारा कार्यशाला, कान्फ्रेंस आदि में प्रयुक्त स्टेशनरी, फाइल फोल्डर इत्यादि के लिए प्राकृतिक रेशे व अन्य कुटीर उद्योगों द्वारा निर्मित सामग्री को प्राथमिकता दी जा रही है।

विश्वविद्यालय स्तर पर राज्य के 09 जनपदों में कार्यरत कृषि विज्ञान केन्द्रों द्वारा प्रदेश के सुदूर पर्वतीय क्षेत्रों में रेशों को प्राप्त करने वाली पौधों की प्रमुख प्रजातियों के गुणवत्तायुक्त उत्पादन की उन्नत तकनीकियों से कृषकों को अवगत कराया जा सकता है।

प्रसार शिक्षा निदेशालय की प्रशिक्षण एवं भ्रमण इकाई, कृषि प्रौद्योगिक सूचना केन्द्र एवं प्रसार शिक्षा निदेशालय में स्थापित राज्य कृषि प्रबन्धन एवं प्रसार प्रशिक्षण संस्थान, उत्तराखण्ड (समेटी–उत्तराखण्ड) भी इस तकनीकी हस्तान्तरण में प्रसार कर्मियों/कृषकों/कृषक महिलाओं/ग्रामीण युवक–युवतियों में क्षमता व कौशल का निर्माण करने में अपना बहुमूल्य योगदान दे सकता है। उत्तराखण्ड की प्राकृतिक सम्पदा को वस्त्र उद्योग में उपयोग कर किसान, प्रदेश की कृषि को नई दिशा दे सकते हैं। समेटी–उत्तराखण्ड द्वारा सीमान्त वर्ग के किसानों मुख्यतः युवा वर्ग को कृषि विविधीकरण विषय पर आयोजित प्रशिक्षणों में इन रेशों के बारे में सम्बन्ध वैज्ञानिकों द्वारा प्रशिक्षण दिए जा चुके हैं। प्रसार शिक्षा निदेशालय द्वारा आयोजित किए जाने वाले विभिन्न प्रदर्शनियों, किसान मेलों आदि में कृषि आधारित इन रेशों से वन उत्पादों की प्रदर्शनी का स्टॉल लगाकर उपभोक्ताओं को इनके प्रति जागरूक करना होगा, व किसानों को भी इन से होने वाली आय के बारे में जानकारी देनी होगा।

मुझे यह बताते हुए अपार हर्ष का अनुभव हो रहा है कि अब विश्व की सबसे कीमती मूंगा रेशम उत्पादन में उत्तराखण्ड का भी नाम जुड़ गया है। अभी तक पूरे विश्व में मूंगा रेशम उत्पादन देश के उत्तर–पूर्वी राज्य ही करते थे, लेकिन उत्तराखण्ड उत्तर भारत का पहला राज्य होगा, जहाँ मूंगा रेशम के साथ ही अन्य सभी प्रकार के रेशम का उत्पादन शुरू हो गया है। सर्वे में यह पाया गया है कि बागेश्वर जिले के कपकोट क्षेत्र में मूंगा रेशम उत्पादक कीट (एन्थीरिया असमा) के लिए पोषक पादप (लिटसिया पोलियंथा) प्रचुर मात्रा में उपलब्ध है, वहीं ऊंचाई वाले भाग में पोषक पादप (पर्सिया बांबी) भी पर्याप्त मात्रा में है। किसानों को इसके उत्पादन सम्बन्धित तकनीकी जानकारी प्रदान की जा रही है।

कहने का तात्पर्य यह है कि उत्तराखण्ड में कृषि जोत का आकार का कम होना, सिंचाई सुविधाओं का सीमित होना आदि नकारात्मक पहलुओं के होते हुए भी जड़ी–बूटी उत्पादन, फल उत्पादन, बेमौसमी सब्जी उत्पादन, पुष्प उत्पादन, मौन पालन, पशु पालन, मुर्गी पालन एवं रेशम पालन के साथ ही कृषि आधारित अपारम्परिक रेशम का वस्त्र उद्योग को विकसित करने की भी अपार सम्भावनाएं हैं, बस जरूरत लोगों में इनके प्रति जागरूकता लाने व इससे सम्बन्धित नई तकनीकी के हस्तान्तरण की है। सभी प्रसार वैज्ञानिकों से यह अपेक्षा है कि वे प्रदेश के कृषि विकास एवं कृषकों की आर्थिक स्थिति को सुदृढ़ करने में अपना बहुमूल्य योगदान देगें, व उत्तराखण्ड को खाद्यान्न के साथ–साथ अन्य क्षेत्रों में भी आत्मनिर्भर बनाएंगे।

(वाई0पी0एस0 डबास)

सम्पर्क सूत्र :– डा0 वाई0पी0एस0 डबास, निदेशक प्रसार शिक्षा, गोविन्द बल्लभ पन्त कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय
पन्तनगर–263 145, ऊधमसिंह नगर (उत्तराखण्ड), ☎ 05944–233336 (कार्यालय), 233664 (निवास), Email-dee_gbpuat@rediffmail.com

विश्वविद्यालय हेल्प लाइन दूरभाष सं0 05944–234810, किसान कॉल सेन्टर निःशुल्क दूरभाष सं0 1800–180–1551

दृश्य यात्रा

कृषि विज्ञान केन्द्रों द्वारा आयोजित प्रशिक्षण, प्रदर्शन एवं भ्रमण कार्यक्रमों की झलकियाँ

मुद्रक : कृषिविश्वविद्यालय मुद्रणालय, पन्तनगर